IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जीवन बीमा की बढ़ती मांग और इसकी उपयोगिता का अध्ययन

पुष्पराज पटेल (शोधार्थी)
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय
छतरपुर, मध्य प्रदेश, 471001

डॉ. ओ पी अरजरिया (प्राध्यापक)
महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय
छतरपुर, मध्य प्रदेश, 471001

शोध सार– जीवन बीमा एक ऐसा उपाय है जो भविष्य मे आने वाली अनिश्चित घटनाओं में बीमित व्यक्ति को आर्थिक रूप से सुरक्षा प्रदान करता है यह एक प्रकार का सुरक्षा कवच कहा जा सकता है और भविष्य में यह हो रही आर्थिक हानि से मनुष्य को सुरक्षित करता है लेकिन कुछ लोग जागरूकता के अभाव के कारण बीमा का महत्व नहीं समझते परंतु मैं यहां यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि बीमा की आवश्यकता ऐसे लोगों को ज्यादा है जो किसी भी शासकीय या अशासकीय सेवाओं में नहीं है क्योंकि ऐसे लोगों के साथ किसी भी प्रकार की दुर्घटना होने पर कोई भी आर्थिक सहायता नहीं होती है। ऐसे समय में उनके परिवारों को आर्थिक रूप से सहायता की आवश्यकता होती है दूसरे पक्ष से देखें तो जो लोग एक निश्चित रोजगार में नहीं है उनके लिए जीवन बीमा धन संचय करने में सहायता करता है जिससे वह छोटी–छोटी रकम एक निश्चित समय तक जमा करके अवधि पूर्ण होने पर परिपक्वता राशि के रूप में एक बड़ी धनराशि प्राप्त कर लेते हैं जिससे कि वह राशि उनके छोटे उद्योग धंधों में काम आती है एवं यह उनके लिए भविष्य कि संचित निधि भी होती है यदि इसके बिपरीत उस बीमाधारक के साथ किसी कारण से दुर्घटना हो जाती है तो उस बीमाधारक को बीमाधन के हिसाब से क्लेम बीमा कम्पनियों के द्वारा प्रदान किया जाता है।

मूल शब्द– जीवन बीमा, बीमा की उपयोगिता, सामाजिक लाभ, धन संचय, बीमाधन, प्रीमियम, क्लेम, परिपक्वता राशि।

परिचय– बीमा एक अप्रत्याशित घटना के कारण होने वाली आर्थिक हानि के प्रति सुरक्षा है। बीमा एक ऐसा साधन् प्रस्ताव है जिसमें हम कुछ प्रीमियम के बदले अपने आर्थिक हानि के जोखिम को दूसरे पक्ष पर डालते हैं। बीमा भविष्य में किसी भी प्रकार के नुकसान से आसानी से निपटने का प्रभावी हथियार है हमें नहीं पता कि कल क्या होगा इसलिए हम बीमा पॉलिसी के जरिए भविष्य में संभावित नुकसान की भरपाई की कोशिश करते हैं हम सभी ने बीमा के बारे में बहुत कुछ सुना है एक सामान्य धारणा के रूप में बीमा एक ऐसा साधन है जो आपको भारी वित्तीय नुकसान से बचाने के लिए बीमा एक वित्तीय प्रबंधन की तरह काम करता है। बीमा एक अनुसंधान है जिसके द्वारा एक पक्ष जिसे बीमाकर्ता कहा जाता है दूसरे पक्ष बीमित व्यक्ति को बचाने का वादा करता है जिसके बदले वह एक निश्चित रकम (प्रीमियम) के रूप में दूसरे पक्ष से लेता है और इस रकम के बदले वह एक निश्चित धनराशि की आर्थिक सुरक्षा की गारंटी प्रदान करता है बीमा को सामान्यतया दो भागों में बांटा गया है।

1. सामान्य बीमा।

2. जीवन बीमा।

सामान्य बीमा को भी मूलतः दो कैटेगरी में रखा गया है–

(अ) मोटर बीमा।

(ब) स्वास्थ्य बीमा।

मनुष्य का बीमा दो तरह से होता है एक तो जीवन बीमा और दूसरा स्वास्थ्य बीमा। ये जो स्वास्थ्य बीमा होता है वह सामान्य बीमा की श्रेणी में आता है जीवन बीमा को परिभाषित करने के लिए भारतीय जीवन बीमा निगम के स्लोगन – ''जिंदगी के साथ भी, जिंदगी के बाद भी'' के द्वारा सभी प्रकार से समझा जा सकता है अर्थात जिस–जिस बीमे की प्रीमियम अवधि पूर्ण होने पर बीमा कंपनी द्वारा भुगतान परिपक्वता (मैच्योरिटी) के रूप में किया जाता है और यदि प्रीमियम भुगतान अवधि के समय दुर्घटना होती है तो बीमा कंपनी के द्वारा बीमा धन के अनुरूप दुर्घटना राशि (क्लेम) के रूप में वापस किया जाता है तो वह बीमा जीवन बीमा की श्रेणी में आता है इसके विपरीत स्वास्थ्य बीमा में प्रीमियम की राशि वापस नहीं होती उसमें विमित व्यक्ति के बीमारी का खर्च मात्र बीमा कंपनी बहन करती है इस प्रकार आज भारतीय जीवन बीमा निगम के साथ–साथ अन्य क्षेत्र की बीमा कंपनी बाजार में उपलब्ध है जो अपनी सेवाएं दे रही हैं।

भारत में जीवन बीमा का प्रचलन या इतिहास– भारत में बीमा का इतिहास कुछ शोधकर्ताओं द्वारा उनकी पुस्तकों में यह दावा किया जाता है कि भारत में वैदिक काल में भी किसी न किसी रूप में बीमा का प्रचलन था क्योंकि ऋग्वेद में संस्कृत के शब्द योगक्षेम का आशय योग शब्द का अर्थ जो प्राप्त नहीं है उसे प्राप्त करना एवं क्षेम् शब्द का अर्थ जो प्राप्त है उसकी रक्षा करना किसी प्रकार के बीमे से ही है जो लगभग 3000 वर्ष पूर्व भारत में आर्यों के द्वारा अभ्यास में लाया गया था। आज के समय भारत में पहली बीमा कंपनी का जो इतिहास है वह 1818 में इंग्लैंड से ओरिएंटल लाइफ इंश्योरेंस कंपनी, जो भारत के कोलकाता शहर में स्थापित की गई। इसके पश्चात भारत की स्वदेशी बीमा कंपनी मुंबई लाइफ इंश्योरेंस जो 1870 से प्रचलन में आई और भारतीय जीवन बीमा की स्थापना 1 सितंबर 1956 में हुई जो अपनी सेवाएं निरंतर रूप से आज तक जारी रखे हुये है।

भारतीय जीवन बीमा निगम– भारतीय जीवन बीमा निगम भारत की सबसे बड़ी जीवन बीमा कंपनी है और देश की सबसे बड़ी निवेशक कंपनी भी है यह पूरी तरह से भारत सरकार के स्वामित्व में है। इसकी स्थापना 1 सितंबर 1956 ई. में हुई इसका मुख्यालय भारत की वित्तीय राजधानी मुंबई में है जीवन में विभिन्न प्रकार के जोखिम में जिन्हें जीवन बीमा पॉलिसियों की मदद से कम किया जा सकता है आज लिंक 2048 पूरी तरह से कंप्यूटर विकृत शाखा कार्यालय, 113 मंडल कार्यालय, आठ क्षेत्रीय कार्यालय, 1381 सैटेलाइट कार्यालय और कार्पोरेट कार्यालय के साथ कार्य करता है लिंक का वाइड एरिया नेटवर्क 113 मंडल कार्यालय को कवर करता है और मेट्रो एरिया नेटवर्क के माध्यम से सभी शाखाओं को जोड़ता है। एलआईसी ने चुनिंदा शहरों में ऑनलाईन प्रीमियम संग्रह सुविधा प्रदान करने के लिए कुछ बैंकों और सेवा प्रदाताओं के साथ समझौता किया है एलआईसी की एक्स और एटीएम प्रीमियम भुगतान सुविधा ग्राहकों की सुविधा के अतिरिक्त है ऑनलाईन कि उसे और आईबीएस के अलावा मुंबई अहमदाबाद बेंगलुरु चेन्नई हैदराबाद कोलकाता नई दिल्ली पुणे और कई अन्य शहरों में सूचना केंद्र शुरू किए गए हैं। अपने पॉलिसी धारकों को आसान पहुंच प्रदान करने की दृष्टि से एलआईसी ने अपना सैटेलाइट संपर्क कार्यालय लॉन्च किया है।

जीवन बीमा के उद्देश्य :–

1. जोखिम प्रबंधन– अप्रत्याशित घटनाओं के कारण होने वाले वित्तीय नुकसान से व्यक्तियों और व्यवसायों की रक्षा करना।

2. वित्तीय सुरक्षा– चुनौतीपूर्ण समय के दौरान वित्तीय स्थिरता और सुरक्षा प्रदान करना।

3. व्यवसाय निरंतरता– यह सुनिश्चित करना कि अप्रत्याशित घटनाओं के बाद भी व्यवसाय संचालित होते रहें।

4. बचत को प्रोत्साहित करना– बीमा पॉलिसी धारकों को भविष्य के लिए बचत और निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

5. उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करना– बीमा वित्तीय सुरक्षा और स्थिरता प्रदान करता है, उद्यमियों को जोखिम लेने और नए व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

इन उद्देश्यों को प्राप्त करके, बीमा व्यक्तियों और व्यवसायों को जोखिम कम करने, वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने और अपने भविष्य को सुरक्षित करने में मदद करता है।

शोध प्रविधिः–

यह शोध पत्र द्वितियक स्रोतों के माध्यम से तैयार किया गया है, जिसमें विभिन्न रिपोर्ट, समाचार पत्र–पत्रिकाएं एवं पुस्तकों से तथ्यों का संकलन कर प्रस्तुत किया गया है।

बीमा की उपयोगिता/महत्वः–

आज के समय में बीमा व्यक्ति के लिए बहुत ही उपयोगी कारक है इसके माध्यम से लोग भविष्य में आ रही आर्थिक हानि को कुछ हद तक कम कर सकते हैं। भविष्य में होने वाली अनिश्चित घटनाओं में परिवार को आर्थिक हानि से बचने के लिए जीवन बीमा आवश्यक है। जीवन बीमा के साथ–साथ शारीरिक बीमा आज की आवश्यकता बन चुका है क्योंकि आज के परिवेश का खान–पान विषैला और गुणवत्ताहीन है जिससे विभिन्न बीमारियां एवं कैंसर जैसी घातक बीमारियां जन्म ले रही हैं कैंसर एक ऐसी बीमारी है जिसके उपचार में व्यक्ति आर्थिक रूप से कमजोर हो जाता है ऐसी बीमारियों में आर्थिक रूप से बचने के लिए कैंसर कवर जैसे प्लान भारतीय जीवन बीमा निगम चला रहा है जिससे कम प्रीमियम में अधिक शारीरिक सुरक्षा दी जाती है जिसके कारण लोग अपनी आर्थिक स्थिति को सुरक्षित कर सकते हैं। और इसके अलावा विभिन्न प्राइवेट बीमा कंपनियां भी शारीरिक सुरक्षा के लिए अनेक प्लान मार्केट में उपलब्ध करा रही हैं जिसके माध्यम से लोग अपनी सुरक्षा और स्वास्थ्य का भरपूर लाभ ले सकते हैं।

1. जोखिम प्रबंधन– बीमा दुर्घटनाओं, बीमारियों या प्राकृतिक आपदाओं जैसी अप्रत्याशित घटनाओं के कारण होने वाले वित्तीय नुकसान को कम करने में मदद करता है,एवं बीमित व्यक्ति को आर्थिक मजबूती देने का काम करता है जिससे व्यक्ति स्वयं को आर्थिक रूप से सुरक्षित महसूस करता है।

2. वित्तीय सुरक्षा– बीमा व्यक्तियों और व्यवसायों के लिए एक सुरक्षा जाल प्रदान करता है, चुनौतीपूर्ण समय के दौरान बीमित व्यक्तियों को वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करता है और उन्हे वित्तीय सुरक्षा कि दृष्टि से अश्वस्त करता है।

3. सुरक्षा– बीमा अप्रत्याशित घटनाओं से परिसंपत्तियों, आय और प्रियजनों की रक्षा करता है बीमा एक अप्रत्याशित घटना के कारण होने वाली आर्थिक हानि के प्रति सुरक्षा है। बीमा एक ऐसा प्रस्ताव है जिसमें हम कुछ प्रीमियम के बदले अपने आर्थिक हानि के जोखिम को दूसरे पक्ष पर डालते हैं।

4. निवेश– कुछ बीमा पॉलिसियाँ, जैसे कि संपूर्ण जीवन बीमा, बचत घटक प्रदान करती हैं, जो दीर्घकालिक निवेश की अनुमति देती हैं एवं जीवन बीमा में जीवन सुरक्षा के साथ–साथ एक भावी सुरक्षा निधि संचित करने में अपना योगदान देती है।

5. अनिश्चितता प्रबंधन– बीमा अनिश्चितता को प्रबंधित करने में मदद करता है एवं भविष्य में असमय होने वाली समस्याओं से आर्थिक निजात दिलाता है जिससे मन को शांति मिलती है और भविष्य सुरक्षित महसूस होता है।

6. तनाव में कमी– बीमा तनाव को कम करता है, क्योंकि आप यह जानते है कि भविष्य में यदि किसी प्रकार की आर्थिक तंगी आती है तो आप उसके लिए पूर्व में ही तैयार हो चुके है जिससे आपको तनाव कि स्थिति नही बनती यह जानकर कि आप अप्रत्याशित घटनाओं के लिए तैयार हैं।

7. व्यवसाय निरंतरता– यदि किसी प्रकार कि व्यवसाय में बाधा तैयार होती है तो आपके व्यवसाय में ज्यादा समस्या नही होगी क्योंकि बीमा अप्रत्याशित घटनाओं के बाद भी व्यवसायों को संचालन जारी रखने में मदद करता है।

8. सामाजिक जिम्मेदारी– बीमा एक जिम्मेदार संस्था है यह अपनी पूर्ण जवाबदेही से काम करता है क्योंकि बीमा स्वयं, परिवार और समुदाय के प्रति जिम्मेदारी दिखाता है।

9. कर लाभ– कुछ बीमा पॉलिसियाँ कर लाभ प्रदान करती हैं, जिससे वित्तीय बोझ कम होता है बीमा आयकर पर छूट बीमा पॉलिसी के प्रकार और देश के कर कानूनों के आधार पर अलग–अलग होती है। यहाँ भारत में इस प्रकार है –

- जीवन बीमाः– जीवन बीमा पॉलिसियों के लिए भुगतान किए गए प्रीमियम आयकर अधिनियम की धारा 80D के तहत ₹1.5 लाख तक की कटौती के लिए पात्र हैं। यदि भुगतान किया गया प्रीमियम बीमित राशि के 10 प्रतिशत से अधिक नहीं है, तो परिपक्वता आय धारा 10(10D) के तहत कर से मुक्त है।

- स्वास्थ्य बीमाः– स्वास्थ्य बीमा पॉलिसियों के लिए भुगतान किए गए प्रीमियम आयकर अधिनियम की धारा 80D के तहत व्यक्तियों के लिए ₹25,000 और वरिष्ठ नागरिकों के लिए ₹50,000 तक की कटौती के लिए पात्र हैं। स्वास्थ्य बीमा पॉलिसियों से प्राप्त आय कर से मुक्त है।

- सामान्य बीमाः– मोटर, घर या यात्रा बीमा जैसी सामान्य बीमा पॉलिसियों के लिए कोई विशेष कर छूट उपलब्ध नहीं है।

10. दीर्घकालिक बचतः– बीमा निम्नलिखित तरीकों से दीर्घकालिक बचत में मदद कर सकता है–

अ) जबरन बचत– बीमा प्रीमियम का भुगतान आम तौर पर नियमित रूप से किया जाता है, जिससे अनुशासित बचत की आदत बनती है।

ब) गारंटीड रिटर्न– कुछ बीमा पॉलिसियाँ, जैसे कि संपूर्ण जीवन या एंडोमेंट प्लान, गारंटीड रिटर्न या नकद मूल्य संचय प्रदान करती हैं।

स) चक्रवृद्धि ब्याज– कुछ पॉलिसियाँ नकद मूल्य पर ब्याज अर्जित करती हैं, जिससे समय के साथ बचत बढ़ने में मदद मिलती है।

द) कर लाभ– भुगतान किए गए प्रीमियम और प्राप्त आय कर–कटौती योग्य या कर–मुक्त हो सकती है, जिससे कर का बोझ कम हो जाता है।

य) सुरक्षा– बीमा अप्रत्याशित घटनाओं के विरुद्ध वित्तीय सुरक्षा प्रदान करता है, यह सुनिश्चित करता है कि अप्रत्याशित खर्चों से बचत कम न हो।

र) दीर्घकालिक विकास– यूनिट–लिंक्ड बीमा योजनाएँ (ULIP) और अन्य निवेश–लिंक्ड पॉलिसियाँ दीर्घकालिक विकास क्षमता प्रदान कर सकती हैं।

ल) सेवानिवृत्ति बचत– कुछ बीमा पॉलिसियाँ, जैसे कि वार्षिकियाँ, सेवानिवृत्ति में एक स्थिर आय धारा प्रदान कर सकती हैं।

व) संपत्ति नियोजन– बीमा का उपयोग लाभार्थियों को धन हस्तांतरित करने के लिए किया जा सकता है, जिससे दीर्घकालिक वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

बीमा को एक व्यापक वित्तीय योजना में शामिल करके, व्यक्ति एक दीर्घकालिक बचत रणनीति बना सकते हैं जो जोखिम प्रबंधन को धन संचय के साथ संतुलित करती है।

निष्कर्षः–

आज के समय में बीमा के महत्व को लोग समझ चुके हैं पीएम सुकन्या जैसी योजनाएं लोगों के बीच में प्रचार प्रसार का काम कर रहीं हैं जिससे बीमा की मांग और बढ़ रही है। इसके अलावा बीमा कर्मचारी एवं एजेंट अपनी–अपनी बीमा योजना के बारे में लोगों को समझाते हैं एवं अपनी पॉलिसीयों को अधिक संख्या में विक्रय करने की अलग–अलग तरीके निजात करते हैं, लोगों को जीवन की दुर्घटनाओं के बारे में आशंका बनी रहती हैं जिससे लोग जीवन बीमा लेना अधिक पसंद करते हैं क्योंकि जीवन बीमा का प्रीमियम एक समय अवधि के बाद पर पटा राशि के रूप में बीमा धारा को वापस मिल जाता है और इसके साथ–साथ दिए गए समय तक उसकी शारीरिक सुरक्षा बनी रहती है इस समय लोग बीमारियों से अधिक परेशान हुये हैं जिस कारण जीवन बीमा के साथ–साथ हेल्थ इंश्योरेंस की मांग बढ़ चुकी है जिससे लोग भविष्य में होने वाली बीमारी के खर्च से बचना चाहते हैं क्योंकि आज के समय में अनेकों प्रकार की बीमारियां समाज में फैल रही है। और दूसरी तरफ देखा जाए तो बीमा की आवश्यकता लोगों को अधिक है जो शासकीय एवं अशासकीय किसी भी प्रकार के कार्य से नहीं जुड़े हुए हैं, ऐसे लोगों को अपनी शारीरिक सुरक्षा के लिए बीमा स्वयं से करवाना पड़ता है ताकि भविष्य में आने वाले आर्थिक संकट से बचा जा सके।

संदर्भ सूचीः–

1. डॉ.एम.महेश कुमार (2022), ''सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के जीवन बीमा योजना का तुलनात्मक अध्ययन''।

2. डॉ.द्विवेदी रत्नेश्वर प्रसाद और अंसारी सोयेबा सना (2020), ''जीवन बीमा कंपनियों में ग्राहक संतुष्टि भारतीय जीवन बीमा निगम एवं बजाज एलियांस का तुलनात्मक अध्ययन रीवा जिले की विशेष संदर्भ में''।

3. पटेल हरीश (2019), ''भारत में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की बीमा कंपनियों का तुलनात्मक अध्ययन उदारीकरण के बाद की अवधि में''।

4. जी. रजनी एवं के.गोमती (2017), ''जीवन बीमा प्रदाताओं की संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों का तुलनात्मक विश्लेषण''।

5. यादव राजेश के. और मोहनिया सर्विस (2015), ''भारतीय जीवन बीमा निगम एवं निजी बीमा कंपनियों के डाबर निपटान का तुलनात्मक अध्ययन''।

6. शर्मा विकास (2013), ''भारतीय जीवन बीमा निगम एवं निजी बीमा कंपनियों के संदर्भ में अध्ययन''।

वेबसाइटः–

1. https://licindia.in/
2. www.life insurance of india
3. https://irdai.gov.in/list-of-life-insurers
4. https://www.researchgate.net/publication/362412139_ROLE_OF_LIC_IN_LIFE_INSURANCE_INDUSTRY